 Volume-5, Issue-12, December - 2016 • ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

Education

Hkkjr ,o tkiku dh 'kf{kd i'kklu 0;oLFkk] 'kf{kd fu;=.k ,o 'kf{kd volj dh lekurk

Mk- fo".k dekj सहायक प्रोफेसर शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

KEYWORDS :

rqyukRed f'k{kk dk rkRi;Z

आज का युग वैज्ञानिक युग है आज एक देश दूसरे देश पर निर्भर है। दूसरे देशों की शिक्षा–प्रणाली के अध्ययन से अपनी शिक्षा प्रणाली में सुधार लाया जा सकता है। तुलनात्मक शिक्षा के अध्ययन में शिक्षा के घटकों की सामान्यता और भिन्नता की बात पाई जाती हैं। तुलनात्मक शिक्षा का उद्देश्य राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक परिस्थितियों का अध्ययन करना होता हैं। तुलनात्मक शिक्षा के अध्ययन का उद्देश्य उन विभिन्नताओं का भी अध्ययन करना है जिनमें किसी देश की शिक्षा प्रणाली दूसरे देश का शिक्षा प्रणाली से भिन्न प्रतीत होती है।

'kf{kd i'kklu dk vFkZ

सामान्य अर्थ में शैक्षिक प्रशासन का अर्थ – शिक्षा की व्यवस्था या शिक्षा के प्रशासन से होता है। शिक्षा का प्रसार तथा उसमें होने वाला लाभ शिक्षा प्रशासन के अभिकरणों की कुशलता तथा गतिशीलता पर निर्भर करता हैं। वर्तमान में शैक्षिक प्रशासन मात्र शिक्षा की व्यवस्था ही नहीं करता अपितु शैक्षिक योजनाएं बनाना, संगठन पर ध्यान देना, निदर्शन पर्यवेक्षण आदि अनेक कार्यों से संबंधित है। विभिन्न शिक्षाविदों एवं विचारकों के आधार पर शैक्षिक प्रशासन को निम्न बिन्दुओं के आधार पर विश्लेषण किया जा सकता हैं।

1. शैक्षिक प्रशासन एक ऐसा प्रबंध होता है जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी के मध्य शिक्षक अधिगम की प्रक्रिया सम्पादित होती हैं।
2. शैक्षिक प्रशासन में समन्वय एवं अभिप्रेरणात्मक क्रियाओं के तत्व विद्धमान रहते हैं।
3. शैक्षिक प्रशासन के अन्तर्गत विभिन्न मानवीय संबंधों का साकार रूप दिखाई देता है।
4. शैक्षिक प्रशासन में पर्यवेक्षण का गुण पाया जाता है।
5. सामुहिकता से कार्य करने के कारण शैक्षिक प्रशासन में विभिन्न कर्मचारियों एवं शिक्षार्थियों में सहयोग की भावना विकसित होती है।

Hkkjr esa 'kf{kd i'kklu

भारतीय संविधान के अन्तर्गत शिक्षा व्यवस्था पर राज्य सरकार का उत्तरदायित्व है परन्तु संविधान की 7वीं शेड्यूल की संघ सूची तथा समवर्ती सूचि में भी संबंधित प्रावधानों में है। केन्द्रीय स्तर पर शिक्षा का सम्पूर्ण दायित्व मानव संसाधन विकास मंत्रालय (पूर्व शिक्षा मंत्रालय) पर है। राज्य स्तर पर शिक्षा का सम्पूर्ण दायित्व राज्य मंत्रालय अथवा विभाग पर है, जबकि राज्य मंत्रालय दायित्व में सहयोग करते है। कुछ राज्यों में तकनीकों शिक्षा संघ शिक्षा मंत्रालय का दायित्व है, परन्तु अन्य राज्यों में यह उद्योग मंत्रालय का दायित्व है। दो प्रकार की स्थानीय प्राधिकरण शिक्षा प्रावधान का दायित्व रखती है – नगरपालिका प्राधिकरण नगरीय क्षेत्रों में, जिला – परिषद, पंचायत समिति, ब्लॉक समिति ग्रामीण क्षेत्रों में उनका मुख्य संबंध प्राथमिक शिक्षा से है। निजी संगठन की एक प्रमुख भूमिका निभाते है। लगभग सम्पूर्ण पूर्व प्राथमिक शिक्षा निजी संस्थाओं में हैं लगभग 43 प्रतिशत उच्च प्राथमिक विद्यालय 70 कला एवं विज्ञान महाविद्यालय निजी क्षेत्र में है।

tkiku esa 'kf{kd i'kklu

जापान में शैक्षिक प्रशासन चार स्तरों पर किया जाता है –

1. शिक्षा मंत्रालय :
2. शिक्षा परिषद
3. प्रीफेक्युअल शिक्षा परिषद
4. नगर पालिका बोर्ड ऑफ एजुकेशन

1- f'k{kk e=ky; केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं, विश्वविद्यालय, तथा शोध संस्थाओं की व्यवस्था की जाती है। यह शिक्षा मंत्रालय शिक्षा बोर्ड, व्यवसायिक बोर्ड तथा नगरपालिका के शिक्षा बोर्डो को दिशा निर्देशन भी करती है।

2- f'k{kk cksMZ सम्पूर्ण जापान में लगभग तीन हजार नगरपालिकायें है, प्रत्येक नगरपालिका में शिक्षा बोर्ड होते हैं, जो स्थानीय शिक्षा के प्रबंध का कार्य करती है।

3- ihQD;vy f'k{kk cksMZ राज्यपाल पांच सदस्यों को बोर्ड के लिए नियुक्त करता हैं। यह सदस्य बोर्ड में चार वर्ष रहते है और शैक्षिक क्रियाओं की व्यवस्था करते है और उनका निरीक्षण भी करते हैं।

4- uxj ikfydk cksMZ vkQ ,tqds'ku नगरपालिका अध्यक्ष पांच सदस्यों को नियुक्त करता है, जिनका अनुमोदन नगरपालिका करती है, यह सदस्य बोर्ड में चार वर्ष तक रहते है। इसे नगरपालिका शिक्षा सभा भी कहते हैं। नगर पालिका शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों के प्रशासन एवं प्रबंधन कार्य की व्यवस्था करती है।

'kf{kd fu;=.k Hkkjr esa 'kf{kd fu;=.k

आज भारत में विभिन्न प्रकार के राज्य अपने अपने क्षेत्र में शिक्षा की उन्नति के लिए उत्तरदायी है। केन्द्र भी कुछ शैक्षिक क्षेत्रों में उत्तरदायित्व का सह भागीदार हैं सन् 1976 के संविधान संशोधन के अनुसार शिक्षण के कुछ विषय राज्य तथा केन्द्र के संयुक्त उत्तरदायित्व के अधीन रखे गये है। विज्ञान शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और उच्च शिक्षा केन्द्र उच्च अनुसंधान के मानक को स्थापित करने के लिए उत्तरदायी हैं बी. एच. यू. जे.एन.यू. विश्वविद्यालय, भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन, और कुछ अन्य शिक्षा के केन्द्र सीधे केन्द्रीय सरकार के नियन्त्रण में आते हैं। सभी शैक्षिक संस्थाएं, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक संस्थान केन्द्र से प्राप्त धन द्वारा संचालित होते हैं। अतः वे केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के नियंत्रण के अधीन आते है। शैक्षिक नियोजन तथा पिछड़ी जाति की शिक्षा भी केन्द्र के उत्तरदायित्व में आती हैं।

tkiku esa 'kf{kd fu;=.k

जापान में युद्ध से पहले एवं बाद का शैक्षिक नियंत्रण जापान में प्रमुखतया 3 प्रकार के विद्यालय प्रचलित थे। प्रथम प्रकार के विद्यालय थे। मोम्बुशू शासन द्वारा स्थापित करके संचालित किए गए थे, दूसरे विद्यालय स्थानीय संस्थाओं, नगरों, गांवों तथा प्रोफक्चर्स द्वारा सत्यापित थे और तीसरे प्रकार के व्यक्तिगत विद्यालय थे। जापान से सबसे अधिक विद्यालय स्थानीय संस्थानों ने संचालित किये थे और उससे कम शासन द्वारा संचालित विद्यालय थे। जापान के प्रीफेक्चर्स इंग्लैण्ड की काउण्टीज के समान महत्त्वपूर्ण थे और इनकी संख्या 46 थी। शासकी विद्यालयों का नियंत्रण तो सरकार ही करती थी परन्तु शेष विद्यालयों में भी शासन के नियंत्रण युक्त आदशों का पालन किया जाता था। युद्ध के बाद पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था तथा प्रशासन का उत्तरदायित्व स्थानीय परिषदों और नगरपालिकाओं पर होता है। उत्तरदायित्व के साथ–साथ शिक्षा पर भी नियंत्रण करते हैं।

'kf{kd volj dh lekurk

f'k{kk esa volj dh lekurk dk vFkZ

शिक्षा में अवसरों की 'समानता' का विचार फ्रांससी क्रांति के साथ आया व संयुक्त राज्य अमेरिका में, स्वाधीनता युद्ध के बाद इसने स्वरूप ग्रहण किया रजा व प्रेमी (1987) का मत है कि समाज के लाभान्वित वर्गों के हितो में सरक्षात्मक विभेद की नीति का अनुसरण करके शिक्षा में समानता प्राप्त की जा सकती है। इस अर्थ में शिक्षा में समानता और समता का एक ही लक्ष्य है।

Hkkjr esa 'kf{kd lekurk ds lwpd

इन्टरनेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग के 'रिडक्शन ऑफ रीजनल डिसपैरिटीज : द रोल ऑफ एजुकेशन प्लानिंग' नामक मोनोग्राफ में समता के दो सूचकों –

1. साधनों के सूचक,
2. परिणामों के सूचक का उल्लेख है।

1- lk/ku lwpdksa esa lfEefyr gS&
शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, समूहों का गठन व उनकी योग्यताएं, छात्रों का संगठन, भवनों की सुलभता व गुणवता तथा समूहन सुविधाओं की सुलभता व गुणवत्ता, शिक्षा सुविधाओं के उपयोग की मात्रा, अध्यापकों का शैक्षिक दृष्टिकोण, स्कूल का सामाजिक वातावरण।

2- ifj.kkeksa ds lwpdksa esa
विद्यालयों में प्रगति, संज्ञानात्मक उपलब्धियों कौशलों व अभिवृत्तियों का स्तर, प्रतिधारक आदि को शामिल किया गया है। भारतीय विद्वानों ने समानता के निम्न सूचकों का सर्वाधिक प्रयोग किया है विभिन्न क्षेत्रों में स्कूली सुविधाओं की उपलब्ध, लिंग, धर्म, सजातीयता व सामाजिक, आर्थिक स्थिति के आधार पर वर्गीकृत छात्रों के नामांकन अनुपात तथा लिंग व आवास स्थान के आधार पर वर्गीकृत छात्रों की उपलब्धि प्राप्तांक। राष्ट्रीय शिक्षा योजना और प्रशासन संस्थान में किये गये एक अध्ययन में सूचकों के वर्गीकरण की एक व्यापक योजना तैयार की गई है। जिसमें प्रणाली और आधार सामग्री की उपलब्धि के उद्देश्यों की ओर प्रमुख ध्यान दिया गया है। कुल मिलाकर 200 सूचकों की पहचान की गई जो सात वर्गों से संबंधित है –

1. अभिगम्यता के सूचक
2. प्राप्यता के सूचक
3. मात्रा के सूचक
4. गुणवत्ता के सुचक
5. अंतर संयोजना के सूचक
6. समता के सूचक
7. प्रयोग के सूचक

भारत में शैक्षिक सुविधाओं में समानता स्थापित करने के लिए प्राथमिक स्तर पर शिक्षण शुल्क नहीं लेते हैं। पाठ्यपुस्तको व लेखन सामग्री का निःशुल्क वितरण, पुस्तक बैंक योजना का विकास किया जाना व पुस्तकालयों में पुस्तके उपलब्ध करना पुस्तक क्रय अनुदान देने व उनकी संख्या बढ़ाने की व्यवस्था की जा रही है। व छात्र छात्राओं की छात्रवृत्ति देने की योजना चालु है। विकलांग बच्चों की निःशुल्क शिक्षा दी जा रही है। पिछड़े व आदिवासियों को शिक्षा की सभी सुविधाएं प्रदान की जा रही है। स्त्री शिक्षा पर ध्यान दिया जा रहा है।

tkiku esa 'kf{kd volj dh lekurk

एन.सी.पी. विभाग द्वारा यह उचित समझा गया कि शिक्षा व्यवस्था जापानी नागरिकों की आवश्यकता और स्वेच्छा से होनी चाहिए। मोम्बुश और अमेरिकी शिक्षा शास्त्रियों के मतैक्य से प्रीफेक्चर्स और अन्य संस्थाओं की 1946 ई. के राज्य परिषद् द्वारा निर्मित संविधानुसार शिक्षा सुधार संबंधि आदेश प्रदान किये गये। संविधान की धारा 13, 14, 19, 20, तथा 23 द्वारा शिक्षा की नीतियों में जन–विचारों, भावों, आवश्यकताओं, जन–सुवधिाओं और धार्मिक प्रवृतियों को शिक्षा व्यवस्था का आधार माना। संविधान की धारा 26 के अनुसार सार्वजनिक, सर्वसुलभ और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की गई। जनता का शिक्षा प्राप्त करना जन्म सिद्ध अधिकार माना

गया। सह–शिक्षा का प्रचलन हैं।

राष्ट्रीय कोष से अनुमानित धन के वितरण की ऐसी व्यवस्था की गई है कि प्रत्येक नागरिक सामान्य शिक्षा सुविधा पा सके और प्रत्येक प्रीफेक्चर के समान धन प्राप्त हो सके। माध्यमिक विद्यालयों तथा प्राथमिक विद्यालयों के सभी छात्रों को पाठ्यपुस्तकें राष्ट्रीय सरकार द्वारा मुफ्त दी जाती है।

Hkkjr o tkiku dh 'kSf{kd iz'kklu esa rqyuk

भारतीय संविधान के अन्तर्गत शिक्षा व्यवस्था पर राज्य सरकार का उत्तरदायित्व हैं और केन्द्रिय स्तर पर शिक्षा का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व मानव संसाधन विकास मंत्रालय पर हैं। कुछ राज्यों में तकनीकी शिक्षा संघ शिक्षा मंत्रालय का दायित्व है। दो प्रकार की स्थानीय प्राधिकरण शिक्षा प्रावधान का दायित्व रखती है।

जबकि जापान में शिक्षा प्रशासन को चार स्तरों पर किया जाता है। शिक्षा मंत्रालय में केन्द्रीय मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर भी अनेक संस्थाओं, विश्वविद्यालयों तथा शोध संस्थाओं की व्यवस्था की जाती हैं। शिक्षा बोर्ड स्थानीय शिक्षा के प्रबंध का कार्य करती है। प्रीफेक्युअल शिक्षा बोर्ड में राज्यपाल, द्वारा चुने हुए पांच सदस्य शिक्षा व्यवस्था में शैक्षिक क्रियाओं की व्यवस्था करते हैं। नगरपालिका शिक्षा बोर्ड विद्यालयों के प्रशासन एवं प्रबंधन कार्य की व्यवस्था करती हैं।

Hkkjr o tkiku dh 'kSf{kd fu;=.k dh rqyuk

भारत में सभी शैक्षिक संस्थाएं, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक संस्थान केन्द्र से प्राप्त धन द्वारा संचालित होते है। अतः वे केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के अधीन आते हैं।

जबकि जापान प्रथम प्रकार के विद्यालयों पर मोम्बुश शासित करते हैं, दूसरे प्रकार के विद्यालयों स्थानीय संस्थाओं, नगरों गांवों प्रीफेक्चर्स संस्थापित थे। जापान में सबसे ज्यादा संस्थाओं पर स्थानीय संस्थाओं का नियंत्रण रहता है।

Hkkjr o tkiku dh 'kSf{kd voljksa dh lekurk dh rqyuk

भारत में शैक्षिक अवसरों की समानता स्थापित करने के लिए प्राथमिक स्तर व माध्यमिक स्तर पर निःशुल्क दी जाती है। व छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्तियां भी दी जाती है। प्रतियोगिताओं को योग्यताओं के आधार पर नौकरी दी जा रही हैं।

जबकि जापान में संविधान के अनुसार सार्वजनिक, सर्वसुलभ और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की गई है। स्त्री पुरूषों को समान शिक्षा व्यवस्था की गई है।

lkjka'k

भारत जापान की शैक्षिक प्रशासन व शैक्षिक नियंत्रण और शैक्षिक अवसरों की समानताएं लगभग एक जैसी ही प्रतीत होती हैं। शैक्षिक प्रशासन में स्थानीय निकायों व राज्य सरकारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

lUnHkZ xzUFk& lwph

1. ओड़, लक्ष्मी लाल के. (2008) : 'शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि', राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
2. चौबे, सरयू प्रसाद (2008) : 'तुलनात्मक अध्ययन', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
3. जौहरी एवं पाठक (2007) : 'भारतीय शिक्षा इतिहास', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
4. नारंग, सुनीता, अनुराधा (2007) : 'उद्दीयमान भारतीय समाज में शिक्षा', कल्याणी पब्लिर्स, लुधियाना
5. पाण्डे, रामशकल (2005) : 'शिक्षा दर्शन और शिक्षाशास्त्री', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
6. पाठक, त्यागी, (2006) : 'शिक्षा के सिद्धान्त', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
7. पाण्डेय, रामशकल : 'उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
8. पाण्डे, रामशकल (2008) : 'शिक्षा दर्शन', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
9. शर्मा, आर.ए. (2011) : 'विश्व की शिक्षा प्रणालियाँ एवं समस्याएँ'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
10. त्यागी, गुरूसरनदास (2007) : 'शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
11 त्यागी, औंकारसिंह : 'उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा' अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, जयपुर